Importance of Tantra in scholarly outlook (विद्वानों के दृष्टिकोण में तंत्र का महत्व)

Dr. Garima
Assistant Professor, Department of Yoga,
Sahu Ram Swaroop Women's College Bareilly

DOI: 10.52984/ijomrc1105

Abstract:

हमारी भारतीय संस्कृति एवम परंपराओं के गर्भ में अनेक रत्न छुपे हुए हैं उन्हीं रत्नों में एक ऐसा रत्न है जो हमारे समाज में प्रचलित अनेक समस्याओं का निराकरण करने में सक्षम है| परंतु कुछ भ्रांतियों के प्रचलन के कारण यह विकृत रूप लेता चला गया| यह रत्न है तंत्र ,यह वास्तव में बहुत ही गूढ़ और प्राचीन विद्या है| हमारे विद्वानों का यह मानना रहा है कि इस तंत्र साधना के द्वारा हम अनेक प्रकार की शक्ति प्राप्त करते हैं जिसके द्वारा हम अनेक रोगों आदि से समाज को सुरक्षित रख सकते हैं| यदि हम सकारात्मक दृष्टिकोण लेकर चलते हैं तो यह कोई जादू टोना या अहित करने वाली क्रिया नहीं है, बल्कि यह बहुत ही उच्च स्तरीय साधना है जो व्यक्ति के जीवन को सुव्यवस्थित करकी उनकी दैनिक समस्याओं से लेकर अनेक विषम परिस्थितियों में एक सहायक के रूप में सदैव साथ है, यदि साधक इन क्रियाओं का सदुपयोग करता है तो वह इन शक्तियों के द्वारा समाज के प्रत्येक व्यक्ति, वर्ग ,समूह आदि की सेवा कर सकता है, उनके दुख दूर कर सकता है ,उन्हें रोग मुक्त कर सकता है, वास्तव में यह एक ऐसा सरल और सुगम मार्ग है इसका अनुसरण करके व्यक्ति अपने व्यक्तित्व को व्यवस्थित और उच्च स्तरीय व प्रभावशाली बना सकता है, साथ ही साथ वह सभी की सहायता भी कर सकता है, विद्वानों का ऐसा मानना रहा है कि इस विद्या के द्वारा प्रकृति की शक्ति पर भी काबू पाया जा सकता है और आनंददायक स्थितियां भी उत्पन्न की जा सकती हैं और उनका मनमाना उपयोग उपभोग भी किया जा सकता है| परंतु इसके लिए हमें बहुत ही सावधान रहना होगा, इन क्रियाओं का सावधानी से और सही रूप में प्रयोग करना होगा|

अत: इस विषय में इतना ही कहा जा सकता है कि कोई भी क्षेत्र क्यों ना हो तंत्र से अछूता नहीं है क्योंकि लोक कल्याण से लेकर सिद्धि समृद्धि तक आत्मा से परमात्मा तक तंत्र का महत्व फैला हुआ है जो साधक जिस उद्देश्य को लेकर अपनी साधना करता है उसे वैसा ही फल प्राप्त होता है|

Key Words: तंत्र, मनवांछित फल

तंत्र भारत की एक गुढ़ और प्राचीन विद्या है विद्वानों का मानना है कि यह शारीरिक अनुशासन का पालन करते हुए आध्यात्मिक क्षेत्र में प्रगति कर सकने का एक उत्तम साधन माना गया था | परंतु कुछ ही समय बाद लोग इस तंत्र से प्राप्त शक्ति का दुरुपयोग करने लगे जिससे तंत्र का वास्तविक स्वरूप विकृत होने लगा इस संदर्भ में आचार्य श्री का मानना है कि **"जिस प्रकार प्रत्येक संस्था अथवा विचार प्रवाह में क्रमशः अधिकारी और स्वार्थी व्यक्तियों का प्रवेश हो जाता है और वे मूल भावना की तोड़ मरोड़ कर उसे अपनी रूचि अथवा दुरूभि भी संधियों की पूर्ति का साधन बना लेने की चेष्टा करते हैं वही बात तंत्र के संबंध में भी हुई|"**[1]

यदि देखा जाए तो शायद ही कोई क्षेत्र होगा जहां तंत्र का कोई महत्व ना हो हमारे दैनिक जीवन से लेकर मोक्ष प्राप्ति तक प्रत्येक साधक और व्यक्ति के लिए विशेष महत्व रखता है| क्योंकि तंत्र हमारे जीवन में पग-पग पर हमारी सहायता करता है, अनेक आपत्तियों विपत्तियों से हमारी रक्षा करता है, एक नई प्रेरणा मिलती है इस विद्या से| इसी के साथ ही यह हमारे विचारों भावनाओं को श्रेष्ठता की ओर ले जाता है| इस विद्या से सामान्य जन के जीवन की रक्षा तो होती ही है साथ ही साथ हमें सीखने को भी मिलता है कि इसका प्रयोग यदि अच्छे कार्य के लिए किया जाए तो अच्छा फल प्राप्त होता है और गलत प्रयोग से अनर्थ भी हो सकता है |स्वामी सत्यानंद इस विषय में लिखते हैं कि **"तंत्र कहता है अपने कर्मों और विचारों के प्रति हीनता का भाव क्यों रखें,प्रत्येक क्रिया को उपासना का स्वरूप मानना चाहिए|"**[2] उपरोक्त पंक्तियों को ध्यान से पढ़ें तो यह प्रतीत होता हैकि प्रत्येक व्यक्ति के लिए यह महत्वपूर्ण है| एक सच और भी हमारे जीवन का है कि यदि जीवन में सुख और

अनुभव ना हो तो जीवन में नीरसता,कुंठा के साथ जीवन उद्देश्य हीन लगने लगता है क्योंकि एक छोटा सा अनुभव भावना हीन मनुष्य के जीवन में नया आनंद भर सकता है जो कि हमें तंत्र से प्राप्त होता है| तंत्र के महत्व को स्पष्ट करते हुए मत्स्य सूक्त में वर्णन प्राप्त होता है कि

"विष्णवरिष्ठो देवानां ह्रादानामुद्धिस्त्था नदिनांच यथा गंगा पर्वतानां हिमालय:

तथासमस्त शस्त्राणा तंत्रशास्त्र मनुत्मम सर्वकामप्रद्म पुण्यं तंत्रं वैवेद्स्म्नतं"[3]

अर्थात जिस प्रकार देवताओं में विष्णु, ह्रदय समूह में समुद्र ,नदियों में गंगा ,पर्वतों में हिमालय को श्रेष्ठ माना गया है, उसी तरह समस्त शास्त्रों में तंत्र सर्वोत्तम माना गया है| डा परमहंस मिश्र तंत्र के महत्व को बताते हुए अपनी पुस्तक श्री तंत्रलोक में लिखते हैं कि**" तंत्र में किसी समाधान के लिए उत्तर से संतुष्ट करने की परंपरा नहीं है यहां तो स्वयं करना है स्वात्म सक्रियता ही समाधान बन जाती है|"4** इसका तात्पर्य यह है कि तंत्र केवल किसी समस्या के समाधान केवल उत्तर से नहीं देता बल्कि उसका समाधान भी करता है परंतु उस समाधान के लिए स्वयं को ही सक्रिय होना पड़ेगा क्योंकि समाधान हेतु जो भी पूजा जप आदि क्रियाएं या जो भी साधन या साधना होगी उसके द्वारा ही वह स्वयं प्रयास करके समाधान करता है समस्या का | तंत्र केवल जादू चमत्कार नहीं है| यह शरीर को अनंत ऊर्जाओं का रहस्यमय केंद्र मानता है और उन्हीं ऊर्जाओं द्वारा समस्या का समाधान भी किया जाता है|

प्राचीन काल में योग और तंत्र की शक्तियों द्वारा संसार के प्रत्येक व्यक्तियों आदि की बहुत सेवा की गई थी अनेक साधन ऐसे हुए जिन्होंने दुखियों के दुख निवारण में ही अपना जीवन लगा दिया इसके अतिरिक्त अनेक तंत्र शक्तियों के द्वारा ही दुखियों के दुख दूर किए, बीमार रोगियों को रोग मुक्त किया, अंधों को आंखें दी कोढ़ियो के शरीर को शुध्द किया ,अनेक ऐसे उदाहरण शास्त्रों में प्राप्त होते हैं| तंत्र विज्ञान के अनुसार **"सूक्ष्म जगत में चेतना ग्रंथियां विचरण करती रहती हैं जिस उद्देश्य से साधना की जा रही है उसके अनुसार इन्हीं प्रकार की चेतना ग्रंथियों को जागृत किया जाता है ताकि वह क्रियाशील होकर अनुकूल परिणाम प्रस्तुत करने में समर्थ हों|"**[5] इसका तात्पर्य है कि जैसे कोई व्यक्ति अपने मालिक की आज्ञा का पालन करता है वैसे ही यह चेतना ग्रंथियां साधक के साथ अप्रत्यक्ष रूप में हमेशा रहती हैं और अपनी शक्ति सामर्थ्य के अनुसार साधक की आज्ञाओं को पूर्ण करती हैं सामान्यता हम सभी लोग जादू ,चमत्कार, टोना, कामवासना आदि को ही तंत्र समझ लेते हैं और वही इसका स्वरूप भी बनता चला गया परंतु वास्तविकता इसके विपरीत है इस विषय में रमेश चंद्र अवस्थी जी भी कहते हैं कि **"तंत्र की चालू परिभाषा जादू, टोना, कामवासना का उदात्तीकरण या भूमिगत आध्यात्मिक साधना है जो वास्तविकता से परे है अर्थात तंत्र का विकृत स्वरूप है|"**[6] इसी कारण से हमारे समाज में तंत्र को लेकर अनेक गलत धारणाएं लोगों के मन में बस गयी हैं जिससे तंत्र का वास्तविक स्वरूप **विकृत** होता चला गया, हमारे महापुरूषों ने तो योग एवं ज्ञान मार्ग की साधना को भी साधारण व्यक्ति के लिए दुर्गम समझकर तंत्र की तुलना में अधिक सरल रास्ता दिखाया| परंतु इस रास्ते का दुरूपयोग हुआ तो इस विद्या का दुरुपयोग करके इसे बदनाम कर दिया गया, वास्तविकता इससे परे है| इसके वास्तविक स्वरूप को स्पष्ट करते हुए आचार्य श्री लिखते हैं कि **"तंत्र का वास्तविक स्वरूप अंधविश्वास या करोड़ों लोगों की मान्यताओं पर आधारित नहीं है वरन यह अध्यात्म विज्ञान की एक शाखा है जिसका अबलम्बन करने से सर्वथा सामान्य व्यक्ति भी सांसारिक रूप से ऊपर उठकर क्रमशः उच्च जीवन में प्रवेश हो सकता है|"**[7]

तंत्र का महत्व इसलिए भी अधिक है क्योंकि जब तंत्र का प्रचार प्रसार बहुत था तब ऐसे साधक थे जिन्होंने अनेक प्रकार की सिद्धियां प्राप्त कर ली थी जो शायद कहीं से कहीं तक संभव नहीं लगती हैं लेकिन पहले के साधक इससे खूब लाभ उठाते थे तंत्र के महत्व को दर्शाने वाले ऐसे ही साधकों का वर्णन तंत्र के विद्वान पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य अपनी पुस्तक तंत्र महाविज्ञान में करते हुए लिखा हैं कि **"रावण और अहिरावण हजारों मील की दूरी से बिना वैज्ञानिक यंत्रों के आपस में वार्तालाप करते थे नल नील ने पानी पर तैरने वाले पत्थरों से पुल बनाया था, इनके अतिरिक्त अनेक साधक जैसे हनुमान, मारीच,सुरसा,भी इसी श्रेणी में आते हैं क्योंकि हनुमान स्वयं को मच्छर की तरह छोटा बनाने और बड़े पर्वतों को उठाने की क्षमता भी रखते थे इसी तरह सुरसा भी अपने शरीर को विशालतम बना सकती थी और मारीच व्यक्ति के शरीर को पशु से शरीर में बदल सकता था|"**[8]

ऐसे अनगिनत उदाहरण दिए जा सकते हैं लेकिन ना यह संभव है और ना ही आवश्यक हमारा मतलब यह है कि आज के समय में यह विद्या लगभग लुप्त हो चुकी है और हम सभी केबल इसको पढ़कर सुनकर ही संतुष्ट हो जाते हैं आज हमारे समाज में तंत्र का बड़ा महत्व है तो इसका कारण यही यह भी है कि ना जाने कितने लोगों को उनकी समस्याओं का और मनवांछित फल भी इस विद्या से प्राप्त हुए हैं जैसे कि रोग,पीड़ा, प्रेत बाधा, ग्रह शांति इत्यादि इसी अनेक तरह के कष्ट होते थे चाहे वह शारीरिक रहे हो या मानसिक सभी का समाधान इस विद्या से मिलता है| इस विद्या से सभी समस्याएं कैसे दूर होती हैं इसका कारण बताते हुए पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य अपनी पुस्तक तंत्र महाविज्ञान में वर्णन करते हुए लिखते हैं कि" **प्रकृति की शक्ति पर काबू पाकर उन्हें अपनी इच्छा अनुसार वशवर्ती बनाना तंत्र विद्या का प्रधान कार्य है इस विद्या द्वारा आनंददायक स्थितियां उत्पन्न और उपलब्धि की जा सकती है और उनका उपभोग भी किया जा सकता है|"**[9]

उपरोक्त कथा अनुसार जब साधक साधना करता है तो वह प्रकृति की शक्ति के द्वारा ही सभी समस्याओं का समाधान करता है वर्तमान समय में तंत्र का महत्व इसलिए भी अधिक है क्योंकि तंत्र साधना द्वारा व्यक्ति के विकास के अनेक मार्ग इस विद्या के द्वारा खोले जा सकते है जैसे दूसरे के मन को प्रभावित किया जा सकता है ,उसकी गतिविधियों को अपनी इच्छा अनुसार मोड़ा जा सकता है इसके अतिरिक्त निर्मल मन वाले व्यक्ति को स्वस्थ बनाया जा सकता है, बिच्छू,सर्प, के काटे ब विषैले फोड़े आदि का समाधान भी तंत्र द्वारा मिलता है गृह कलेश,भुतोंन्मद, नजर लगने आदि के उपचार तंत्र द्वारा होते हैं| मानसिक उद्वेग, असहनीय पीड़ा, वेदना व शारीरिक अन्य व्यवस्थाओं में तंत्र सहायक सिद्ध होता है| इस विषय में परमहंस जी कहते हैं कि **"तंत्र प्यार भरा निर्देश है विधि में उतार कर मन को समावेश की सुधा से सित करना और कामना के पार उतार लेना तंत्र का वैशिष्ट्य है|"**[10] इसके महत्व को बनाए रखने में एक और महत्वपूर्ण तथ्य है जोकी इस साधना को सभी स्वीकार करते हुए लोग महत्वपूर्ण स्थान देते है इस तथ्य पर प्रकाश डालते हुए आचार्य श्री कहते हैं कि "**सरल से सरल और कठिन से कठिन साधना प्रणाली का विधान तंत्रों मै है|हर स्तरके साधक के लिए उचित निर्देश देता है|साधना का इच्छुक कोई भी व्यक्ति इससे निराश नही हो सकता | यह प्रत्येक आयु के प्रत्येक प्रकार की मानसिक स्थिति वाले साधक के लिए उपयुक्त है |"**[11] आचार्य श्री तो यह भी मानते है कि यह विद्या ही है जिसके द्वारा अपने और अन्यों के ऊपर आई हुई विपत्तियों का निवारण भी सरलता से किया जा सकता है और जो दुष्ट व दुराचारी प्रकृति के लोग हैं उनके प्रहार को पलटा भी जा सकता है| ऐसा माना जाता है कि तंत्र का फल तुरंत होता है और वह फल आश्चर्यजनक होता है| इसलिए सामान्यजन से लेकर विद्वान के लिए भी यह महत्वपूर्ण है| आचार्य श्री के अनुसार तंत्र एक ऐसा मार्ग है जिससे दूसरों के साथ समाज एवं सभी का कल्याण होता है| श्रीराम शर्मा ने आजीवन दूसरों की सहायता की| अनेक रोगी भयंकर रोग से इनकी कृपा से रोग मुक्त हो गए| इन्होंने जन कल्याण सेवा करने के भाव से एक आश्रम की स्थापना की जहां पर दीन दुखियों का दुख सुनकर उनकी सहायता तंत्र के द्वारा की जाती थी| उस आश्रम का नाम आनंद आश्रम रखा जिससे सब आनंद प्रतिष्ठान के नाम से जानते हैं इस विषय में अखंड ज्योति में कहा भी गया है कि "**आनंद प्रतिष्ठान ने अपना एक ऐसा कार्यक्रम बना रखा है कि कठिन साधना द्वारा प्राप्त शक्ति को पीड़ितों की सेवा में लगाया जाए और इसके बदले किसी गरीब अमीर से पैसा का कोई ठहराव न किया जाए अर्थात लोगों के कष्टों को दूर करने का उपचार बिल्कुल मुफ्त किया जाए|"**[१२]

आनंद प्रतिष्ठान को तंत्र विद्या की उपासना का केंद्र माना जाता है क्योंकि यहां तंत्र की अनेक कठिन साधनाएं करके जो शक्ति साधक को मिलती है, उसे वह साधक जनकल्याण के हित में बांट देते हैं |लोगों की परेशानी,कष्ट , सभी तरह की समस्याओं को दूर करने के लिए ही आश्रम को आचार्य ने बनाया निष्णात |यह तंत्र के विद्वान थे वे जानते थे कि तंत्र साधना ही है जो कभी निष्फल नहीं जाती क्योंकि जीवन का कोई भी पहलू क्यों ना हो हम सभी तंत्र लाभ प्राप्त कर सकते हैं इस बात का प्रमाण हमें अखंड ज्योति की निम्नलिखित पंक्तियों से प्राप्त होता है उसके अनुसार **"तंत्र की तकनिकें प्रत्येक स्थिति में असरकारक सिद्ध होती हैं आध्यात्मिक चिकित्सा व्यक्ति के दुर्भाग्य, दोष, पीड़ा प्रतिरोध के निवारण के लिए करते हैं यदि इन तकनीकों का प्रयोग भी किया जाए तो इनका प्रभाव होता है स्थिति कैसी भी हो व्यक्ति कोई भी हो इनसे सटीक असर हुए बिना नहीं रहता|"**[13] शायद इसीलिए आचार्य श्री ने तंत्र को स्वतंत्र विज्ञान कहा है क्योंकि जहां विज्ञान का कुछ लोग सदुपयोग करते हैं तो कुछ लोग वहीं विज्ञान का दुरुपयोग भी करते हैं बाद में यही बात तंत्र में भी लागू हुई आचार्य श्री अपनी पुस्तक गायत्री महाविज्ञान में आगे लिखते हुए बताते हैं कि तंत्र अपने आप में कोई भी बुरी चीज़ नहीं है एक विशुद्ध विज्ञान है वैज्ञानिक यंत्र और रासायनिक पदार्थों की सहायता से प्रकृति की सूक्ष्म शक्तियों का उपयोग करते हैं और इसके अतिरिक्त आचार्य श्री यह भी

बताते हैं कि तांत्रिक किस प्रकार स्वयं को ऐसी स्थिति में ढाल लेता है कि अपने शरीर और मन को एक विशेष प्रकार से संचालित कर के प्रकृति की शक्तियों का मनमाना उपयोग करते हैं आचार्य श्री तंत्र को गौर से देखते थे उनके अनुसार तंत्र का उपयोग तब होता है जब किसी जरूरतमंद व्यक्ति के लिए उसका उपयोग किया जाए नहीं तो वह उपभोग ही हो सकता है और कुछ नहीं आनंद प्रतिष्ठान पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य का एक तंत्र का ही प्रयोग है जो तंत्र के द्वारा सभी जहां तंत्र के द्वारा कष्ट दूर करते हैं यहां तंत्र विद्या द्वारा कठिन से कठिन रोग ,मानसिक, बुरी आदतें ,संतान संबंधी चिंता, ग्रह कलेश ,बुरे दिन आने की आशंका, भूत बाधा, अशांति का अधिक आसानी से उपचार किया जाता है और उन्होंने एक महत्वपूर्ण नियम बना रखा था और अपनी पत्रिका ज्योति में स्पष्ट भी कर दिया था कि हमारे मारण,मोहन ,उच्चाटन, वशीकरण ,स्तंभन आदि पाप पूर्ण क्रियाएं किसी के पक्ष विपक्ष में किसी भी दशा में नहीं करते इसके अलावा यह भी ध्यान रखना चाहिए कि तेजी मंदी का भाव, सट्टा ,फ्यूचर, गड़ा धन इन कामों के लिए भी पूछने ,चोरी का माल ,भविष्य ,हस्तरेखा ,जन्म पत्र आज भी हम नहीं बताते |इसलिए कोई महानुभाव इन कामों के लिए भी पूछने का काटने का कष्ट न उठावे इन्होंने एक बात और भी कही कि हमारा उद्देश्य शारीरिक मानसिक तथा बाहरी दोनों कष्टों से अपने भाई-बहनों को बचाने का प्रयास करना है| अतः यह स्पष्ट हो जाता है कि तंत्र वास्तव में एक बहुत ही महत्वपूर्ण प्रक्रिया है जिसके अनुपालन मात्र से समस्त कष्टों का निवारण सरलता पूर्वक किया जा सकता है|

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. तंत्र महाविज्ञान ,पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य, संस्कृति संस्थान वेद नगर, बरेली |१९९४ पेज ०४
2. तंत्र क्रिया और योग विद्या, स्वामी सत्यानंद सरस्वती ,बिहार योग विद्यालय मुंगेर,|पेज ३७०
3. उद्धृत तंत्र महाविज्ञान, पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य, संस्कृति संस्थान वेदनगर, बरेली|१९९पेज32
4. तंत्र आलोक, प्रथम भाग, डा परमहंस मिश्र, संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी| 5/57
5. सावित्री कुंडली एवं तंत्र, पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य, अखंड ज्योति संस्थान, मथुरा| पेज ८१७
6. योग तंत्र साधना ,डॉ रमेश चंद्र अवस्थी, विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी|,१९९६ पेज ०८
7. तंत्र महाविज्ञान, भाग 1, पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य, संस्कृति संस्थान वेद नगर, बरेली |१९९४
8. तंत्र महाविज्ञान, भाग 1, पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य, संस्कृति संस्थान वेद नगर, बरेली|१९९४पेज 33
9. तंत्र महाविज्ञान, भाग 1, पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य, संस्कृति संस्थान वेद नगर, बरेली |१९९४ पेज १५
10. तंत्र आलोक, प्रथम भाग, डा परमहंस मिश्र, संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी|पेज 11
11. तंत्र महाविज्ञान, भाग 1, पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य, संस्कृति संस्थान वेद नगर, बरेली |१९९४पेज1 ४३
12. अखण्ड ज्योति ,पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य,जून १९४० पेज 3
13. अखण्ड ज्योति,डा प्रणव पण्डया,2004, पृ 33